IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन

प्रिंसी समैया[1] ,डॉक्टर संतोष साल्वे[2]

[1]पीएचडी शोधार्थी कला एवं मानविकी संकाय मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी भोपाल भारत

[2]निर्देशक कला एवं मानविकी संकाय मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी भोपाल भारत

(मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र जबलपुर जिले केमहाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन। के प्रति जागरूकता पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन इस हेतु जबलपुर जिले के महाविद्यालय के 15 शिक्षकों तथा 15 शिक्षिकाओं को लिया गया कुल मिलाकर 30 शिक्षक शिक्षिकाओं को का चयन किया गया तथा यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों पर के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया तथा प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात के माध्यम से ज्ञात किया जाएगा। जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना– शिक्षक देश एवं राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करते हैं। वे देश का भविष्य निर्माण करते हैं। शिक्षा का उचित विकास शिक्षकों पर निर्भर करता है। शिक्षक विद्यार्थी में व समाज में एक अच्छे व्यक्तित्व व वातावरण का निर्माण करता है। तथा उसे संवारता है। विद्यार्थीयों के जीवन में उचित मूल प्रवृत्तियों की ओर जाने के लिए शिक्षकों की अहम भूमिका है, विद्यार्थियों के अंदर संज्ञाना कला कौशल विकास सवरेंगे। शीलगुण एवं अभिवृत्ति के निर्माण में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अहम भूमिका ही शिक्षकों के सामाजिक व्यवहार को देखते हुए उसके द्वारा समाज से अच्छे व्यावहाकिरक संबंध बनाये जाते हैं। एक शिक्षक अपने विचार मत एवं योग्यता का मूल्यांकरन सामाजिक वास्तविकता को ध्यान में रखकर करता है। सामाजिक वास्तविकता से तात्पर्य इस समझदारी से है कि दूसरे लोग समान्तः कैसे सोचते हैं या महसूस करते हैं।

चाहे व शिक्षक हो या सामाजिक सामान्य व्यक्ति समाज में व्यक्ति सदैव इससे या साथ ढूंढता रहता है। सभी व्यक्तियों के साथ या समूहों में जूझते मिलने की प्रवृत्ति उसके व्यवहार में ही निहित रहती है क्योंकि दूसरे व्यक्तियों से अलग–अलग क्षेत्रों में मिलता जुलता रहता हूँ, एक शिक्षक सिर्फ विद्यालय ही नहीं वरन वह विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है तथा अनेक व्यक्तियों के व्यक्त्वि विचारों, दृष्टिकोण एवं मत से प्रभाावित हो जाता है।

1.हर लोक के अनुसार सामाजिक व्यवहार का रूप सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करना है।

2.मोरेनसम के अनुसार समाजिक व्यवहार का अपनी ओर दूसरों की उन्नति के लिए योग्यता की वृत्ति है।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव–

जो हमारे पास है वह है व हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति सर्वपल्ली राधा कृष्णन– ''सभ्यता वह है जो हमारे पास है संस्कृति वह है जो हम है''।

अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के कारण भारत अपनी एक विशिष्ट पहचान है क्योंकि शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहां विविध परंपराओं और बहू संस्कृतियों वाले राष्ट्र है हमारा भारत देश ही एक ऐसा देश है। हमारी संस्कृति को दर्शन वाली चीजें नृत्य संगीत– साहित्य, पहनावा, रहन सहन आदि बहुत कुछ है।

वैश्वीकरण के कारण भारत की पश्चिमी दुनिया या पाश्चात्य संस्कृति की कई चीजें भारत में व्याप्त हो गई है, इनके प्रभाव से हमारे देश के खाने की आदतों व पहननावा, रहन सहन और कुछ पहलुओं पर भारी बदलाव आया है वेशक अब पोशाक या कपड़ों को पहनना अपराध तो नहीं हो सकता है लेकिन त्यौहारों और शुभ अवसर पर पारंपरिक पहनावे जैसे बातों को नजर अंदाज करने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। तथा एक शिक्षक होने के नाते यह विचार हमारे सभ्यता एवं संस्कृति की नींव है ऐसा सोचकर शिक्षकों को भी जागरूक रहना चाहिए जैसा कि कहाजाता है ''अति सर्वत्र बडयिते'' अर्थात् किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है दूसरे देशों की संस्कृति को अपनाना उसे उत्साह के साथ सीखना डालता नहीं है लेकिन उन्हें हमारी परम्पराओं और संस्कृति का अंदेखा कर आगे नहीं रखना चाहिए।

शिक्षा क्षेत्र में भी हम महाविद्यालय आज में अधिकांश शिक्षा में पश्चिमी लोगों के कार्य शामिल करते हैं व उन्हें पढ़ाते भी हैं, इसका यह अभिप्रास है कि हम पाश्चात्य संस्कृति का पूर्ण समर्थन करते हैं।

पश्चिमीकरण ने भारत में शिक्षा के क्षेत्रों में भी बहुत हमारे भारत को लाभांवित किया है जब अंग्रेजों ने भारत पर कब्जा कर लिया था तो उन्होंने पूरे देश में कई स्कूलों का निर्माण किया और इससे साक्षरता पर में वृद्धि हुई और समाज के सबसे गरीब वर्ग को ज्ञान प्राप्त हुआ।

किसी भी व्यक्ति या शिक्षक का व्यवहार उनके दृष्टिकोण मूल्यों मान्यताओं और दैनिक प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है, सामाजिक व्यवहार अन्य व्यक्तियों के व्यवहार स्वयं की सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है सामाजिक परिस्थितियॉ चार प्रकार की होती है।

शिक्षक/व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच।

शिक्षक/व्यक्ति तथा समूह के बीच।

शिक्षक/व्यक्ति तथा सामाजिक संस्था के बीच।

शिक्षक/व्यक्ति तथा सम्पूर्ण समाज के बीच।

व्यक्ति/शिक्षक चाहें दूसरे व्यक्ति के प्रति व्यवहार करता हो, प्राथमिक समूह के प्रति व्यवहार करता हो। द्वितीयक समूह के प्रति व्यवहार करता हो। चाहे सम्पर्ण समाज के प्रति व्यवहार करता हो उन सभी व्यवहारों का संबंध समाज मनोविज्ञान से है।

उद्देश्य–

1. जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों पर के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन।

2. जबलपुर के महाविद्यालय की शिक्षिकाओं से सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन।

3. जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना–

1. जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. जबलपुर के महाविद्यालय की शिक्षिकाओं से सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन महाविद्यालय के 15 शिक्षकों तथा 15 शिक्षिकाओं को लिया गया कुल मिलाकर 30 शिक्षक शिक्षिकाओं को लिया गई इन पर सामाजिक व्यवहार अपनी के द्वारा अध्ययन कार्य किया गया।

उपकरण– सामाजिक व्यवहार मापनी– डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य में जबलपुर जिले के महाविद्यालय के 15 शिक्षक एवं 15 शिक्षिकाओं पर सामाजिक व्यवहार मापनी द्वारा परीक्षण किया गया मापनी को अंकित करने के पश्चात् प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण मध्यमान (डमंद) प्रमाणिक विचलन (क) तथा टी परीक्षण द्वारा किया गया।

तालिका क्रमांक– 1.1

क्रं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
1.	शिक्षक	15	1.39	291.22	0.24	सार्थक अंतर नहीं है।
2	शिक्षिका	15	2.49	730.20		

स्वतंत्रता की कोटि– 248 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान– 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता का मान– 2.35

परिणाम– उपरोक्त तालिका क्रं. 1.1 में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिका के मध्य सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थकता नहीं पाया गया।

उपरोक्त परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामाजिक व्यवहार शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावहारिकता को प्रदर्शित करता है। सामाजिकता बहुत कुछ पारिवारिक संबंध एवं परिवार के सदस्यों के सामाजिक एवं आपसी संबंधों पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष–

जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जबलपुर के महाविद्यालय की शिक्षिकाओं से सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जबलपुर के महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सामाजिक व्यवहार का शिक्षकों और किशोर विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वलीचा मीरा, प्रदीप कुमार इन जनरल ऑफ एडवांस एण्ड स्कारलरी रिसर्च इन अलाइड एजुकेशन।

2. Google https://brainly.inquestion/13394161.

3. दीपा परते Emerging Research Journal vol.2 Dec.2017 ISSIN 2436-2424

4. सिंह अरूण कुमार (1991) समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास चतुर्थ, संबोधित नवीनतम संस्करण।

5. सुलेमान मुहम्मद (2012) उच्चता समाज मनोविज्ञान मोतीलाल बनारसीदास द्वितीय एवं परिवर्तित संस्करण।